चापल *n.* (a चपल s. अ) 1) mobilitas, instabilitas. 2) festinatio. RAGH. 3.16. (Cf. hib. *tap* «quick, swift».)

चामर *n.* (a चमर s. अ) flabellum e cauda bovis grunnientis factum.

चामीकर *n.* (a चमीकर cuniculus, s. अ) aurum. N. 21.11.

चाम्य *n.* (r. चम् s. य) cibus.

चाय् 1. *P.A.* (पूजानिशामनयोः *K.* निशामे ऽर्चे *V.*) honorare, venerari, colere; animadvertere, videre, audire.

चार *m.* (r. चर् s. अ) 1) actio eundi. 2) explorator, emissarius. HIT. 88.11. 3) carcer. (Cf. lat. *carcer.*)

चारण *m.* (r. चर् *in forma caus.* s. अन) 1) saltator. 2) Geniorum ordo, Wils.: «a panegyrist of the gods». IN. 2.1.

चारित्र *n.* (r. चर् s. त्र, inserto इ) vitae ratio, bona vitae ratio. N. 18.9. R. Schl. I. 1.3.

चारिन् (r. चर् s. इन्) iens, ambulans, *in fine compp.* IN. 1.31. H. 1.25. RAGH. 19.33.

चारु (*f.* वी, ut videtur, a r. चर् s. उ) pulcher. IN. 2.17. DR. 6.19. (Cf. angl. *fair*, v. चर्; bret. *kaer* pulcher.)

चारुलोचन (e praec. et लोचन *n.* oculus) pulchros oculos habens. H. 2.36.

चारुसर्वाङ्गदर्शन (*BAH.* e चारु et comp. *TATP.* significans, omnium membrorum visus, e सर्व omnis, अङ्ग membrum et दर्शन visus) pulchram omnium membrorum speciem habens. N. 12.26.

चालन *n.* (r. चल् in forma caus. s. अन) motio, agitatio. HIT. 51.16.

1. चि 5. *P.A.* चिनोमि, चिन्वे (*Caus.* चापयामि, gr. 521.) 1) colligere, cumulare. SU. 4.9.: वने पुष्पाणि चिन्वती; RAGH. 9.24.: चितविक्रम. 2) tegere, obruere. A. 9.9.: सर्वतो माम् अचिन्वन्त सरथन् धरणीधरैः. 3) quaerere. N. 16.6.: चिन्वन्तो नैषधं सह भार्यया. (Cambro-brit. *cai* collectio, lat. *cu-mulus*, cujus *u* aut e Gunae vocali अ explicaverim aut ex आ formae caus. चापयामि, ad quam Pottius p. 204. apte, ut mihi videtur, refert polon. *kupa* cumulus, et nostrum *Haufen*; forma russ. **куча** *kúc'a* nititur eo, quod palatales facile in gutturales et hae in palatales transeunt.)

c. अप deminuere, attenuare. SAK. 31.15.: अपचितङ्गात्रम्.

c. अव colligere. SA. 5.107.: फलान्य् अवचितानि.

c. आ tegere. MAH. 1.3993.: शरैर् आचित; RAGH. 7.10.: अर्धाचिता रसना (Schol. अर्धा मणिभिर् गुम्फिता).

c. आ praef. सम् *id.* N. 17.8.: मलसमाचित.

c. उप *id.* SU. 1.9.: मलोपचित; A. 3.35.*a.*: वाणीः सो 'पचीयत (omisso augmento); 35.*b.*; 9.10.: उपचीयत् part. pass., v. gr. 597.

c. नि tegere. GAT. 1.: निचितङ् खम् उपेत्य नीरदैः.

c. निस् decernere. N. 19.9.: इति निश्चित्य मनसा; v. gr. 635. निश्चित decretus, certus. BH. 18.6.: इति मे निश्चितम् मतम्; R. I. 19.11.

c. निस् praef. वि 1) *id.* BH. 13.4.: विनिश्चित; *cf.* विनिश्चय SU. 3.10. 2) considerare, deliberare, perpendere. N. 5.15.: सा विनिश्चित्य बहुधा विचार्यच पुनः पुनः; 10.13.: स विनिश्चित्य बहुधा. 3) perficere. BHAR. 2.72.: विनिश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः.

c. परि 1) colligere, cumulare, augere. RAGH. 3.24.: तत् तयोः (प्रेम) परस्परस्यो 'परि पर्यचीयत; 8.18.: परिचेतुन् धारणाम्; 9.29.: अभिनयान् परिचेतुम् इवो 'द्यता. 2) detegere, patefacere, notum facere. HIT. 92.7.: यथा 'यम् परिचीयते तथा कुरुत; UR. 86.1. infr.: आश्रमम् परितः परिचिता एतस्य शाखामृगाः.

c. प्र colligere. SU. 4.10.: नदीतीरेषु जातान् सा कर्णिकारान् प्रचिन्वती; N. 20.11. *TROP.* se recolligere, vires recuperare, reficere, recreare. RAGH. 3.7.: प्रचीयमानावयवा रराज सा.

c. वि 1) quaerere. SA. 5.83.: विचिनोति हि मे माता; RAGH. 12.61.: दृष्टा विचिन्वता तेन ... जानकी. 2) perquirere, perscrutari. N. 16.7.: चेदिपुरीम् ... विचिन्वानो ऽथ वैदर्भीम् अपश्यत्; SA. 6.3.: आश्रमान् नदीश्चै 'व ... विचिन्वन्तौ.

c. सम् colligere, coacervare. HIT. 30.1.: चिरसञ्चितन् धनम्. SA. 6.11.

2. चि 10. *P. i.q.* चि 5.

चिकित्स् *Desid. radicis* कित्.